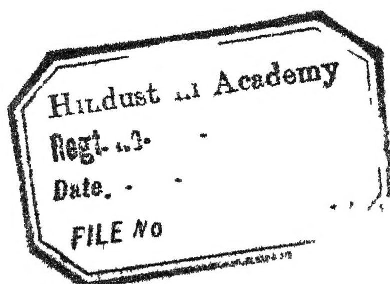
"भावी-भारत" ग्रन्थमाला सं० ८

लक्ष्मण शतक

(समाधान कवि रचित)





सम्पादक

ठा० गंगाप्रसाद सिंह 'विशारद'

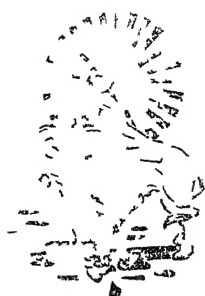
श्री.

कविवर समाधान-रचित

लक्ष्मणशतक

सम्पादक

अखौरी गंगाप्रसादसिंह 'विशारद'



दुर्गाप्रसाद खत्री

प्रोप्राइटर लहरी बुकडिपो, काशी द्वारा

प्रकाशित

द्वितीयबार] १९२७ [मूल्य ≡)

मुद्रक—श्रीगुरुराम विश्वकर्मा, सरस्वती प्रेस, काशी ।

प्रस्तावना

हिंदी-साहित्य के लिए यह कम गौरव की बात नही है कि, उसका आरम्भ एक उत्कृष्ट-वीर रस-पूर्ण काव्य से होता है। पृथ्वीराज रासो वीर-भावापन्न काव्यो में एक अमूल्य रत्न है, और उसका रचयिता महाकवि चन्दबरदाई अपनी इस अतुल सम्पत्ति के कारण अजर और अमर रहेगा। चन्द के अनेक पारवर्त्ती-कवियो ने वीर-भाव-पूर्ण अनेक रासो की रचनाएँ की और इस प्रकार हिंदी-साहित्य का शैशव काल वीर-रस के काव्यो की सृष्टि और पुष्टि मे व्यतीत हुआ। परन्तु खेद का विषय है कि, अपने यौवन युग में प्रवेश करते ही वह शृङ्गार रस मे ऐसा एकान्त चित्त से तल्लीन हुआ कि, अन्यान्य अगो के पुष्ट करने की चिन्ता को तिलाजलि दे, नायक-नायिकाओ के हाव-भाव तथा अंग-प्रत्यंग के विश्लेषण में ही अपनी समस्त शक्ति और कौशल का एक दीर्घ काल तक अपव्यय करता रहा। हमारे इस कथन का यह तात्पर्य नही है कि शृङ्गार-रस की ओर ध्यान ही न देना चाहिए था। नही, शृङ्गार-रस भी एक प्रधान रस है और उसे पुष्ट करना भी आवश्यक था किन्तु अन्य रसो की एकदम उपेक्षा कर केवल शृङ्गार ही रस की पुष्टि मे समय और शक्ति का व्यय अपव्यय के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है? शृङ्गार-

रस की अपेक्षा वीर रस किसी प्रकार कम आवश्यक नहीं है। शृङ्गार रस के समान वीर-रस का क्षेत्र भी विशद और व्यापक है। जाति को जीवित रखने के लिए वीर-साहित्य ही सबसे अधिक उपयुक्त है। परन्तु फिर भी इसकी इतनी अवहेलना की गई है जिसका ठिकाना नहीं। यह अवहेलना केवल हिंदी के ही आचार्यों की ओर से नही की गई है, बलिक सस्कृत के विद्वानो ने भी इस ओर समुचित ध्यान नही दिया है। युद्ध-वीर, दान-वीर, दया वीर, धर्म्म वीर आदि चार-पॉच भेदो को बतला कर ही वे इस रस के सबध में मूक हो गए हैं। शृङ्गार-साहित्य के जहाँ हजारो उत्कृष्ट कवि हो गए हैं, वहाँ चन्द, भूषण, लाल, सूदन, हरिकेश आदि नौ दस कवियो से ही वीर-साहित्य के कवियो की नामावली की इति हो जाती है। यद्यपि इन लोगो की रचना चातुरी चमत्कारपूर्ण तथा प्रशसनीय है परन्तु शृङ्गार-साहित्य के कवियो के समान ये लोग वीर साहित्य को पुष्ट और पूर्ण नही कर सके हैं। और उसी अवस्था में वह आज भी वर्त्तमान है। यद्यपि आजकल लोगो का ध्यान वीर साहित्य की ओर आकृष्ट हुआ है, किन्तु अब तक किसी विशेष उल्लेख योग्य उत्कृष्ट ग्रथ-रत्न की सृष्टि नही हुई है। खैर—

प्रस्तुत पुस्तक, लक्ष्मण-शतक, वीर साहित्य का एक उत्तम ग्रन्थ है। इसमें लक्ष्मण और मेघनाद के युद्ध का विविध छन्दो में अच्छा वर्णन किया गया है। भूषण या पद्माकर की कविताओं के समान उपमाओ की अधिकता न होते हुए भी कविता सीधी-

सादी और स्वाभाविक हुई है। यह पुस्तक ब्रज-भाषा मे लिखी गई है। अस्तु, ब्रज भाषा से अनभिज्ञ पाठको के लिए इस पुस्तक का समझना दुरूह जान हमने कठिन शब्दो का अर्थ फुटनोट मे दे दिया है, इससे पाठको को पुस्तक के समझने मे सुबिधा होगी।

यह पुस्तक सबसे पहले काशी के ब्रजचन्द्र यंत्रालय से सवत् १९३९ मे निकली थी इसके बाद सन् १८९९ ई० में काशी के भारतजीवन प्रेस से प्रकाशित हुई। प्रस्तुत सस्करण पूर्व दोनो संस्करणो का मिलान करके यथाशक्ति शुद्धतापूर्वक प्रकाशित किया गया है, आशा है, अब इसके पाठ में किसी प्रकार की अशुद्धता न होगी।

मध्यमेश्वर, काशी। }
९ श्रावण १९८४ }

अखौरी गंगाप्रसादसिंह

श्रीगणेशाय नम॰

लक्ष्मण शतक

दोहा

राम रमा[1] रामानुजहि,[2] प्रनवो पवनकुमार[3] ।
श्रीगुरु गनपतिचरन भजि श्रीमत सभु उदार ॥१॥
श्रीबागेस्वरिपद-पदुम प्रनवो परम पवित्र ।
मेघनाद के जुद्ध में बरनो लखन चरित्र ॥ २ ॥
श्रीरामानुज मनुज नहिं धरनीधारन[4] धीर ।
बन्दो जन दुख अच्छमन लच्छ लच्छमन बीर ॥३॥

घनाक्षरी

प्यारो सीताराम को, उज्यारो[5] रघुबस को,
अन्यारो जन पैजवारो[6] न्यारोरूरो[7] रन को,
रविकुल मण्डन प्रचण्ड, बलबण्ड भुज-
दण्डन उदण्ड सो खण्डन खलन को ।
'समाधान' रच्छक अपच्छ पच्छ लच्छमन,
अच्छमन लच्छमन क्रच्छ दीन जन को,
सिहन को सर्भ गर्भवन्तन को गर्भगज,
अर्भ[8] अवधेस को सगर्भ[9] सत्रुहन को ॥४॥

---

१ लक्ष्मी, सीता । २ लक्ष्मण । ३ हनुमान । ४ शेषनाग । ५ उज्वल करनेवाला । ६ प्रणपालक । ७ श्रेष्ठ । ८ पुत्र । ९ भाई ।

भूप दसरत्थ को नवेलो अलवेलो[१] रन-
रेलो रोप झेलो दल निश्चर निकर को,
'समाधान' कीरति उमण्डी[२] खलखण्डी चण्डी-
पति सो घमण्डी कुल मण्डी दिनकर को।
इन्द्रमदगञ्जन[३] को भञ्जन प्रभञ्जन
तनै को मनरञ्जन निरञ्जन उभर को,
राम गुन ज्ञाता मनवाँछित को दाता हरि-
भक्तन को त्राता धन्य भ्राता रघुबर को ॥५॥
महाबाहू भूप दसरत्थ को कुमार,
मारहू[४] तें सुकुमार जैतवार[५] समरन को,
असरन सरन अमङ्गलहरन भार
धरनी धरन मजबूत महा मन को।
नन्दन[६] सुमित्रा को निकन्दन[७] अमित्रन को,
धाम जगबन्द्य[८] बडो बन्धु सत्रुहन को,
कन्ता[९] उरमिला को नियन्ता[७] दुष्ट जीवन को,
हन्ता इन्द्रजीत को निहन्ता[७] खलगन को ॥६॥

छन्द अनङ्गसेषर

प्रबुद्ध क्रुद्ध कुम्भकर्ण राम सो बिरुद्ध सुद्ध,
जुद्ध मध्य जुज्झ गयो स्वर्गधाम सुम्भियौ[१०],

---

१ अनोखा। २ उमडी या फैली। ३ मेघनाद। ४ कामदेव। ५ जीतने वाला। ६ पुत्र। ७ मारनेवाले। ८ लोकपूज्य। ९ पति। १० पहुँचा।

परी अतङ्क[1] लङ्क में निसङ्क लङ्कनाथ धूर्त,
तूर्न पूर्न सेन पुत्र बोल चोख चुम्भियो[2]।
ज्वलन्तजङ्ग जुज्झ[3] में अधूर्ज[4] वूर्ज[5] सज्जिय,
विसर्जिय चलो मु बीर बेगि छोनि[6] छुम्भियो[7],
निबन्ध कोप जुग्म[8] बन्ध बन्धु लच्छबन्धि कै,
बली अजीत इन्द्रजीत[9] जैति-खम्भ[10] उम्भियो ॥७॥

घनाक्षरी

इतहूँ प्रचण्ड दोरदण्डन कठोर घोर,
धनुष षट कोर छोर छोनी[6] सोगगन मैं,
भनै 'समाधान' अगदादिक समेत ओज,
उमँगि झपन्त कीस बँधे छनपन मैं।
काल ज्यौं कराल कोप जगै ज्वाल माल मानो,
होत है अकाल प्रलैकाल त्रिभुवन मैं,
समर-विधाता बार-बिधिन को ज्ञाता अन-
रूको जन त्राता रामभ्राता महारन मैं ॥८॥
ठाढो जुद्धभूमि मै त्रिसुद्ध राम बधु,
बिजै ही लैं कीलै लेत कोटि रुद्र के अतङ्क को,
क्रुद्ध दृग दाहक[11] दुवन दल[12] दाहैं लेत,
ढाहैं लेत मानहुँ त्रिकूटगिरि बङ्क को।

---

१ भय। २ चूमा। ३ युद्ध। ४ अश्रेष्ठ। ५ श्रेष्ठ। ६ पृथ्वी। ७ क्षुभित हुई। ८ दोनों। ९ मेघनाद। १० विजय स्तभ। ११ जलाने वाला। १२ असुर दल।

भनै 'समाधान' दसौ मुखन मरोरे लेत,
छोरे लेत बन्दि सुरसिद्ध मुनि रङ्क को,
रन की झकोरें लेत सुभट लटोरें लेत,
सुजस बटोरें लेत टोरें लेत लङ्क को ॥९॥

आयो इन्द्रजीत दसकन्ध को निबन्ध बन्ध,
बोल्यौ रामबंधु सो प्रबन्ध कीरबान[१] को,
को है असु-माल[२] को है काल बिकराल मेरे—
सामुहे भये न रहै सान[३] महेसान[४] को।
तू तो सुकुमार बार लच्छन कुमार मेरी—
मारबे सँभार को सहैया घमासान को।
बीरन-चितैया रनमण्डल-रितैया काल-
कहर बितैया हौ जितैया मघवान[५] को ॥१०॥

इतै रमानन्द उतै रावन को नन्द बढी—
मार यो बलन्द ज्यौ धनञ्जय[६] निषाद[७] की,
दुहूँ रनधीर दुहूँ धनुषधुरीन कान-
कुण्डल को दण्ड चण्ड मण्डली बिषाद की।
भूप रन भू पर दिसान बिदिसान पर,
छाय सुरखण्ड घोर मण्डित निनाद की,
यानावली[८] व्यौम गिरबाना वली थकी देखि,
बानावली[९] लच्छन-कुमार मेघनाद की ॥११॥

---

१ खड्ग। २ सूर्य। ३ शान। ४ महादेव। ५ इन्द्र। ६ अर्जुन।
७ शिव। ८ यानों से पूर्ण। ९ बाण चलाने का कौशल।

छन्द कीरवान

इत चढ्यौ रामबधु कपि कटक प्रबन्ध,
उत रच्छदलबन्ध[1] इन्द्रजीत[2] समुहान,
दुहूँ ओर कुल रज्जधर[3] छत्रपन[4] सज्ज,
भटभीर गलगज्ज[5] बल बज्जत निसान[6] ।
जनु जलधि[7] उमण्ड घन घटन घुमण्ड,
जुग छलन छुमण्ड दल बद्दल मिलान,
तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान झुकि झारै कीरवान ॥१२॥
भटसिंह सम छुट्ट इक दुक्क सहजुट्ट,
लागे अत्रन[8] के फुट्ट गिरैं ढुट्ठि ढुट्टि त्रान[9],
भिरै सूर समरत्थ राम रावन सपत्थ,
करि होत लत्थपत्थ भर पथ बलवान।
कपि जुत्थ[10] षटकन्त गिरि पुञ्ज पटकन्त,
चापचर्म चटकन्त लटकन्त जातुधान,[11]
तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान झुकि झारै कीरवान ॥१३॥
जहाँ करिकै झपट्ट जिमि पावक लपट्ट,
भट पटकि चपट्ट दहपट्ट असुरान,

---

१ राक्षस दल। २ मेघनाद। ३ राजस स्वभाव से पूर्ण। ४ शास्त्र धर्म युक्त। ५ हुंकार। ६ डंका। ७ समुद्र। ८ अस्त्रों। ९ कवच। १० दल। ११ राक्षस।

गहि हत्थन सो हत्थ किये रत्थन विरत्थ,
गज मत्थन अमत्थ चले सत्थ तजि प्रान।
धरि एकन छटकि भुवपट्ट से पटकि,
गहि एकन फटकि ते भटकि असमान,
तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान भुकि भारै कीरवान ॥१४॥
जहँ सेल्हन[1] धमक तेग चपल चमक,
तीर तोमर[2] तमक मच्यौ घोर घमसान,
घने घावन धमक मुदगरन दमक,
सार भारन भमक हाँकि हक्कन जवान।
फटि देह दरकन्त फूटै चाड करकन्त,
कटि मुण्ड फरकन्त ढरकन्त मुरदान,
तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान भुकि भारै कीरवान ॥१५॥
हनुमन्त की रपेट दै लँगूर[3] की लपेट,
दल दुष्टन दपेट चरपेट चखलान,
बजै नख चटचट बजै दन्त खटखट,
गिरैं श्रोन घटघट फटफट अरु जान।
कपि कूह किलकार खल मुण्ड भिलकार,
परे पेट पिलकार कटे निश्चर निदान,

---

१ चट्टान। २ भाले की तरह एक प्रकार का अस्त्र। ३ पूँछ।

तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान भुकि भारै कीरवान ॥१६॥
इत कीस बजरङ्ग उत राछस अभङ्ग,
दुहू ओर सफजङ्ग दल बद्दल मिलान,
खल बीर हरखन्त कर चाप करखन्त,
बान बुद बरखन्त जनु टीडिय उडान।
लगे वारि उमदन्त कटे दन्तिय[1] सदन्त,
गिरि शृङ्गन उडन्त बगपन्ति अनुमान,
तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान भुकि भारै कीरवान ॥१७॥
कहु सुण्डधर तुण्ड कटि टुट्टहि भसुण्ड,
जनु लुट्टहि सु गुण्ड व्याल कुहर कटान,
कहु लागे भट अङ्ग सक्ति तोमर उमङ्ग,
जनु पैठत भुजङ्ग बलमीक[2] अकुलान।
कटै कायकल[3] लल्ल बोलैं घाय बल लल्ल,
चलैं धार अललल्ल बही श्रोन[4] सरितान,
तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान भुकि भारै कीरवान ॥१८॥
धर छत्रपन रूह परे खेत करैं कूह,
कपि कौणप[5] समूह जुग कुल सरसान,

---

१ हाथी। २ बाबी। ३ शरीर। ४ शोणित। ५ राक्षस।

जहँ कच्छप कपाल बने मच्छ करबाल,
सिर कुन्तल से बाल ह्य ग्राह उपमान।
गिरैं ग्रीव गजराज मक्र[1] करभी[2] समाज,
उसनीक राजि राज वृन्द उदक[3] समान,
तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान झुकि झारै कीरवान ॥१९॥
लखै देव घमासान चढे गगन बिमान,
चित्र पुत्रिका समान रह्यौ भूलि मघवान[4],
चले सम्भु सिरताज जुद्ध दरसन काज,
सँग जोगिनिसमाज दन्त पीसत मसान।
सजै भूत बह बह बजै डौरु डहडह,
गौरि गावै गहगह जोर जोग्गिनि सुगान,
तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान'
बीर लच्छन सुजान झुकि झारै कीरवान ॥२०॥
गुहैं सम्भु मुण्डमाल गाजैं प्रमथै निहाल,
प्रेम मारत खुसाल भूत जाल भरुहान,
नचैं भैरव उताल प्रेत देत करताल,
ताल पूरत बेताल षट ताल सुरसान।
भरि खप्परन सीस देति कालिका असीस,
खग खिभिरख बीस खाय आमिष[5] अघान,

---

१ मगर। २ ऊँटनी। ३ पानी। ४ इन्द्र। ५ मांस।

तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान झुकि झारैं कीरवान ॥२१॥
खाय घायन सभूर रहे बीर भरपूर
दुहू सेन चकचूर भये सुरखि भिरान,
कहुं बानर बरुथ्थ[1] कहु रैनचरजुथ्थ[2],
गिरै लुथ्थन पैं लुथ्थ गिद्ध गिद्ध कलु भान।
करि विग्रह बिलास जनु फूलत पलास,
धरि हिम्मत हुलास होत मन न मलान,
तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान झुकि झारैं कीरवान ॥२२॥
एकै दौरि एक बीर नख दन्तन सरीर,
करैं कैयो खण्ड चीर जिमि चीर चीर जान
गल गज्जहि कपीस डारै ऊपर गिरीस,
भये रैनचरखीस दबे सीस कचरान।
एकै बूड़े सिंधु नीर लगे रामानुज तीर,
भये सेह रनधीर भट भीर भहरान,
तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान झुकि झारै कीरवान ॥२३॥
कहू हथ्थिन पै हथ्थि कहू रथ्थिन[3] पै रथ्थि,
कहू पथ्थिन पै पथ्थि कपि कौणप मिलान,

---

१ झुण्ड। २ राक्षस सेना। ३ रथी।

कहू मुण्डन पै मुण्ड कहू रुण्डन[1] पै रुण्ड,
कहू तुण्डन पै तुण्ड[2] परे लोटत धरान[3] ।
कच्यौ जोर सफजङ्ग टुट्टफुट्ट तनभङ्ग,
छिन्नभिन्न अङ्ग अङ्ग भगे राछस जवान,
तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान झुकि झारै कोरवान ॥२४॥
रनजीति करै कूह रिच्छ साखा मृग जूह,
भगे बब्बर समूह लखि बीर खिसिआन,
महाबली मेघनाद गलगज्ज सिहनाद,
देखि जूझे मनुजाद कियो माया को बिधान ।
बन्यो राति को प्रकार दसौदिसा अन्धकार,
नही सूझै निज कर कपि लागे अकुलान,
तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान' बीर,
लच्छन सुजान झुकि झारै कोरवान ॥२५॥
उठे बारिद[4] उमण्ड घोर जटन घुमण्ड
झंझा कुकन झुमण्ड धूरि धूधर उडान,
भई बन्द कपि दृष्टि लागी होन श्रोन बृष्टि,
मलमूत पीव सृष्टि हाड़ दन्त केस कान ।
उठी डाकिनि अपार सिर छूरिन उतार,
भरै लोहू सो कपार करै काटि कतलान,

---

१ धड़ । २ सूँड़ । ३ पृथ्वी । ४ बादल ।

तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान झुकि झारैं कीरवान ॥२६॥
बढ्यौ जोर पारावार[1] चहूओर धारा पार,
नहिं जासु पारावार[2] ग्रह ग्राह उच्छलान,
करैं असुर अतङ्क मिलै नभ में निसङ्क,
अन देखे हङ्क हङ्क अत्र[3] घालत अमान।
फिरैं भूत प्रेत धार मुख बोलैं मारमार,
कपि सीस असरार सार झार झहरान,
तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान झुकि झारैं कीरवान ॥२७॥
घालैं कुन्तसक्ति[4] जाल करबाल करकाल,
गिरैं दण्ड भिण्डिपाल[5] सिला सीसन जघान,
तीर तोमर चलन्त पासु परिघ[6] परन्त,
मुदगर बरसन्त कटैं बीर फरसान।
तम सूझत न अंग करैं कैसे सफजङ्ग,
गाजैं राछस अभङ्ग कपि लागे बिलखान,
तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान झुकि झारैं कीरवान ॥२८॥
कपि बृन्द रनधीर लखि ब्याकुल सरीर,
तब रामानुज बीर तानि कानलो कमान,

---

१ समुद्र। २ थाह। ३ अस्त्र। ४ एक प्रकार का अस्त्र। ५ छोटा डण्डा जो प्राचीन काल में फेंक कर मारा जाता था। ६ गड़ाँसा।

हिय रामपद धारि मन्त्र राम को उचारि,
अरि उग्रता बिचारि घाल्यो राम अत्रबान ।
भयो अन्धकार-नास मिट्यौ माया को निवास,
छायो रबि को प्रकास देखि परे जातुधान[1],
तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान झुकि झारैं कीरवान ॥२९॥
रन इन्द्रजीत मण्ड तजि माया को घमण्ड,
जेते अस्त्र सस्त्र छण्ड तेते काटे बलवान,
दसरत्थ को सपूत सर मार मजबूत,
कियो सीस बिनु सूत दल्यो दल को निसान ।
सर एक गुन काटि सर एक धनु काटि
सर चारौ हय[2] काटि कियो बिरथ अमान
तहँ तेज को निधान करि कोप 'समाधान',
बीर लच्छन सुजान झुकि झारैं कीरवान ॥३०॥

घनाक्षरी

जप तप जोग यज्ञ धारना समाधि साधि,
साधु रीति करि परिहरि छल छुद्र मैं,
बिधि सो लईती माँगि इन्द्रजीत साँग जगै,
जामे ज्वाल माल ज्यो कराल काल रुद्र मैं ।
भनै 'समाधान' घाली लच्छमन-बच्छ तकि,
तच्छन प्रचण्ड बल देखि रन मुद्र मैं,

---

१ राक्षस । २ घोडा ।

पौनपूत झपटि छलीन को पटकि लई
　　बीचही झटकि दई फटकि समुद्र मैं ॥३१॥
पारावार परी तेज भरी लखि साँग क्रुद्ध,
　　लागी न धरनि धराधार धरि धाइयो,
देवलोक दावत भगावत महरलोक[1],
　　लोऊपन ठोकत बिरञ्चि लोक जाइयो।
भनै 'समाधान' एरे अधम निलज्ज बिधि,
　　बर दै असुद्ध जुद्ध मध्य को पठाइयो,
छक्कर लगैहो सट खोयो जस टक्कर को,
　　झूँठ को अट्टकर को फक्कर बनाइयो ॥३२॥
बिधि-उर छोभ छुद्र छक्कर को छायो बेगि,
　　सुमिरि बोलायो रिषि नारद उदार को,
कह्यो सुत जौलो जग पौनपूत रैहै तौलो,
　　भेदन न पैहै सेल्ह[2] सेष अवतार को।
भनै 'समाधान' हनुमान को बुलायो मुनि,
　　जानि बोले जाहु अब जाँतो जैतवार को,
सीलमति चीन्ही ज्वाब जोम कीन कीन्ही फेरि,
　　मन्त्रि तकै लीन्ही दीन्ही रावनकुमार को ॥३३॥
अरि बिच लावनी बढ़ावनी बिजै की बह,
　　बीर बिच लावनी सकति[3] कर मैं लई,

---

१ भू भुव आदि चौदह लोको में से एक लोक। २ बाण। ३ शक्ति।

त्रिभुवन साला की हहाइ हाइ हाइ मची,
ज्वाला की दसौ दिसान दारुन छटा छई।
भनै 'समाधान' प्रलै पावक समान,
कम्पमान सुर असुर महान मुरछा भई,
घोरघन घोरत अनन्त उर फोरत,
महीतल को मोरत महातल चली गई ॥३४॥
सेल्ह के लगे तें गिरे लीला सो लखन धायो—
सखन समेत मेघनादहू सँभरि कै;
भनै 'समाधान' को उठाइ सकै सेष रूप,
भारे जोमवारे[1] खल हारे बल करिकै
तौ लगि सिधारो अनियारी गिरि डारो मोहि—
मारो पौनपूत दल राछस कचरि कै,
नीति को निबन्ध करि जस को प्रबन्ध दीन-
बन्धु जू को बन्धु ल्यायो कन्ध पर धरि कै ॥३५॥
जाको तेज धारै ब्रह्माण्ड झुकि झारै लोक,
चौदहू हजारै जारै सुरासुर भीर को,
सातहू समुद्र जाके स्वास तें ससकि जात,
धरनी धसकि[2] जात धारत न धीर को।
भनै 'समाधान' मानो बिधि को बखानो बली,
लीला मुरझानो कछु पावत न पीर को,

---

१ ताकत वाले। २ फट जाती है।

नेकु फूतकारै तौ चराचर चिकारै जो,
दुनी को करै छारै को पछारै ताहि बीर को ॥३६॥
प्रलैकाल प्रलै पवमान[1] प्रलै भानु प्रलै,
रुद्र प्रलै पावक जनक पञ्चगन को,
मेटि कै असेष ब्रह्माण्ड को बिसेष सेष,
आपुही रहत सो सहस्र महा फन को।
को है रामबधु सो दुनी मे दीनबधु ओड,
बन्धन प्रबन्ध पाल्यौ बिधि के बचन को,
होनी को फिरैया कोसलाय को घिरैया ब्रह्म-
हद को हिरैया को भिरैया लछमन को ? ॥३७॥
अरिदल भीषन बिभीषन बिभावरी मै,
लिये उलमूक उकदारु करतल मै,
सेरह उग्र ज्वाल की जलूस मै जरे है सब,
गेर गेर डेरा डेरा फिर्यो कपिबल मै।
भनै 'सावधान' तहाँ सावधान बैठो बीर,
मुरछा बिगत तायो तेज कन झल मै,
रिच्छन को रुन्त बिरदैत बलवन्त देख्यौ,
जोम सो ज्वलन्त जामवन्त एक दल मै ॥३८॥
बूझत वृत्तान्त जामवन्त यौ बिभीषन सो,
कहाँ पौनपूत जो सपूत समरन सो,

---

1 पवन।

जाते अञ्जनी की नीकी बीर जननी की बात,
बन्दर अनी[१] की जोम नीकी करै मन सो।
भनै समाधान' हनुमान की हकीकत को,
सकी कत बुद्धि जो न बोलत बचन सो,
अरिन अजीवकारी[२] रघुबर जीव सम,
जीवत है बीर की न जीवत है तन सो ॥३९॥
बचन बिभीषन बखानै बुद्धिवन्त लखो,
जामवन्त त्यारी तेरो महा हित सील मै,
जैसो पौनपूत है तिहारो मजबूत मोहि,
दीखै ना सपूत सदा समर सबील मै।
भनै 'समाधान' ऐसो नेकु निरखो न रवि,
नन्द मै न राम मै न रामानुज डोल मै,
केसरी सबल मै न अङ्गद असल मै न,
रिच्छ कपिदल मै न नल मै न नील मै ॥४०॥
रिच्छकुल-कन्त[३] कह्यौ रच्छकुलकन्त वाही,
मन्त नै दुरन्त काज कीन्हे जगदीस के,
वाके होत हङ्क मच्यौ लङ्क मै अनङ्क कपि,
सङ्क जान देखो बङ्क नंकत नदीस के।
भनै 'समाधान' हनुमान सो न आन,
मरदान घमसान[४] मै समान जो फनीस[५] के,

१ सेना। २ प्राणनाशक। ३ जामवन्त। ४ युद्ध। ५ लक्ष्मण।

जीवत न जीवत से वाके बिनु जीवत हीं,
जीवत न जीवत ते जीवत कपीस[1] के ॥४१॥

दोहा

चले रिच्छपति रच्छपति येहि बिधि कहत उदन्त ।
पीछे बिलपत राम के खरो लख्यौ हनुमन्त ॥४२॥

घनाक्षरी

जामवन्त सहित बिभीषन सिधारे राम,
बिकल निहारे लई लीला की लहरि है,
हाय सेष अनुज गयो तू परलोक मैं हू —
मरिहौं ससोक को बिलोकि न हहरिहै[2] ।
भनै समाधान' जैहैं बन्दरहू कन्दरन,
बिरह जुरागिनि[3] सों जानकीहू जरिहै,
करिहै जहाँ जो मन जैहै सो तहाँ को यह—
साको कै बिभीषन कहाँ को पगु धरि है ॥४३॥
लच्छमन मुरुछा तें अङ्गद सकाने[4] देखि,
अति अकुलाने पेखि साखामृग भीर को,
बिकल बिभीषन बदन कुम्हिलाने देखि,
सोक सरसाने सबै रिच्छकुल-हीर को ।
भनै 'समाधान' कपि राजै कलपत देखि,
बिलपत देखि हाय हाय रघुबीर को,

---

१ हनुमान । २ शिथिल होगा । ३ ज्वराग्नि । ४ सशंकित ।

साहस का भान रामदल को निसान तहाँ
आन हनुमान कह्यौ यारो धरो धीर को ॥४४॥

सवैया

भोजन पीछे सदाहीं करैं फल भोजन आछे कराइ कै मो क
सोए सोआइ कै मोहि सदाँ सदाँ पीछे चले गई चाल वा सो कहँ
तू रन माहि चल्यो तजि मोहि महासुख चाह्यौ न चाहिये तो क
हाय हा लच्छन तूँ पहिले बिनु मेरे गये क्यो गयो सुरलोकहँ ? ॥४९

घनाक्षरी

धिग हनुमान को अमान[1] बलवान घम-
सान मै पलाय प्रान आमरो[2] धरत है,
आपु भजि आयौ हाय तो कहँ जुझायो सेलह-
हू तें न बचायो सत्रु डङ्कन डरत है।
भनै 'समाधान' सार झारन झरत लखि,
बीरन लरत भय मानि कै टरत है,
कीरति मोहाई सूरताई[3] की बहाई,
करै जङ्ग क्यौ सहाई दूजो भाई को भरत है ? ॥
कपिदल-पति बेर बेर बिलपत प्रल-
पत कलपत जलपत रघुनायको,
मेरी कटी बाँह कौन करैगो समाह[4] जाके,
बल के उमाह[5] सो वरे ते धनु सायको।

---

१ अत्यन्त । २ अमर भी । ३ वीरत्व । ४ समता । ५ उत्साह ।

भनै 'समाधान' और सुलभ जहान सब,
सान मिलै मान मिलै आन मिलै पायको
तात मिलै मात मिलै सुहृद सुजात मिल
बहुरि न भ्रात मिलै सोदर सहायको ॥४७॥
प्रभु को प्रलाप नर-लीला को बिलाप हाहा,
लच्छमन जाप करै कौन ताकी गिनती,
बृथा हथियार बृथा जोबन को जोम कीजै,
छोड़ि दीजै बान औ कृपान प्रान मिनती।
'समाधान' ऐसी लखि राम उर आधि भो,
अगाध अपराध निज तासो करी हिनती,
भरतगरूर सूरता के रस पूर पूर,
हरि के हजूर हनुमन्त करैं बिनती ॥४८॥

दोहा

बिषम जखम लखि लखन तन, बिलखन जीवन काज।
दीनबंधु के दीन सुनि, बचन कुप्प कपिराज ॥४९॥

घनाक्षरी

सातहू सरितपति सातहू अचल बसु,
कुल गिरि दसौ दिसि जामै सजिअतु है,
एक नभमण्डल अखण्ड नवखण्डजुत,
भूमि आदि चौदहू भुवन भजिअतु है।

ऊमर[1] समान परमान ब्रह्माण्ड जान,
जैहैं कहाँ जातुधान काहे लजिअतु है,
करुनानिधान मरदान बलवान,
रघुराज क्यौं निरास ह्वै सरास तजिअतु है ॥५०॥
मोतें बलवान लङ्कनाथ है निदान सुनि,
राम की जुबान हनुमान समुझावही,
दैवजोग पाइ दुष्टजन बढ़ि जाइ,
मान बडे को घटाइ बड़वारी[2] नहि पावही ।
भनै 'समाधान' मान लहत महान छुद्र,
छुद्रता जहान जस कुजस जु गावही
देखो महिभानु गिलै[3] भानु हिमभानु कहा,
नीच सुरभानु बड़ो भानु सो कहावही ॥५१॥
बोले रघुबीर हनुमन्त सो गहीर सुनु,
पौन के सपूत पूत तूत नृपगन को
भनै 'समाधान' परिवार भोग कीजै नीके,
बिभव[4] बिराजै सुख साजै सबै मन को ।
बखत बितीत भये सम्पति भई तौ कहा,
कौन काम जल खेह जुरैं सत्रु तन को,
अरिन को अपकार मित्रन को उपकार,
होइ सकै सतकार जामै बधुजन को ॥५२॥

---

१ गूलर । २ प्रतिष्ठा, सम्मान । ३ निगलना । ४ सम्पत्ति ।

दोहा

वीरघातिनी घात की सुनहुँ बात हनुमन्त ।
दुतिय दिवस निरफल जतन होत उदित लखि अन्त ॥५३॥

घनाक्षरी

बोल्यो कपि होकि[1] नोकि ठाकि भुजदण्ड चण्ड
चहत अगाध अपराध बली मसको[2],
भनै 'समाधान' प्रभु कीजै फुरमान[3] तौ,
मरोरौ भानु तोरो तऊ तोमर फरस को ॥
मेटो महामहिष समेटो जमफाँस फारि.
मेटो ना उदण्ड काल दण्डक नकस को,
दोनो सुधानिधि को निचोनो[4] रघुबीर ! कै
पताल पै पयानो करि आनो सुधरस को ॥५४॥
कहै जौन जौन परे पावत है तौन तौन,
मन गुनि गुनि सुनि सुनि कपि बैन को,
समुझि अकाल प्रलैकाल प्रभु बोले आनो,
लङ्कपति-बैद[5] को दुखी के सुख दैन को ।
भनै 'समाधान' मानि हुकुम धनी को,
अजनी को सूनु[6] दौरि लह्यौ लखन के चैन को,
राम के रुखैन अङ्ग याको तौ दुखै न ल्यायो,
लङ्क तें सुखेन सैन सोवत सुखैन को ॥५५॥

---

१ दर्प से । २ मसल दें । ३ आज्ञा । ४ निचोडे । ५ सुखेन । ६ पुत्र ।

लायो पौनसुवन सुखेन उठि आयो ताहि
बूझयो उपचार को विचार रघुराजही,
बोल्यो बैद बान बसौ तेरे शत्रुधान पै,
जुवान आन भाँति मैं कहो न रिपु-काजही।
रजनी प्रकासी चन्द्रिका सी दीपिका सी देखि,
ल्यावै भट भेजिये जरूर कपि साजही,
सल्लीभूत[1] लखन बिसल्लीभूत[2] होहि मिले
द्रोनगिरि बल्ली[3] जो बिसल्लीरस आजही ॥५६॥
द्रोनगिरि ल्याइबे की ठीक रघुबीर अग्र,
बोले कपि आपु आप विक्रम बहर मै,
नल कपि जावै तीनि राति मै ले आवै,
लगै दोई राति दुविद मयन्द को डहर[4] मै।
भनै 'समाधान' बालिबन्धु बलवान नील,
सील बल ल्यावै एक जामिनी अहर मै,
पैज को पलैया दानो-दल को दलैया बीर,
अङ्गद चलैया ल्यावै चार ही पहर मै ॥५७॥
सुनि कपि बीरनि की औधि पतिऔधि[5] चित्त,
चित्त चकचौंध काम कौन से सपूत को,
रातिही अरातिकृत[6]-घात क्यो सुराति,
परभात[7] होता जात गात आत मजबूत को।

---

१ मूर्च्छित। २ चैतन्य। ३ सजीवन मूरि। ४ रास्ते में। ५ रामा स। ६ शत्रु कृत। ७ सबेरा।

रामसुख मुद्र[1] बूड्यो सङ्कट समुद्र बल—
छोड़ि महारुद्र अवतार के अकूत को,
सोक सन भूल्यौ ह्याव[2] सबन को भूल्यौ, एक—
फूल्यो लख्यो बदन सरोज पौनपूत को ॥५८॥
रघुपति ओर हेरि पवन केसोर,
बरजोर कर जोर कर करुना समाज को,
भनै 'समाधान' हनुमान बीर बोल्यो रचि,
अम्बर अडम्बर खगम्बर के समाज को।
साठि लाख जोजन इहाँ ते गिरिराज,
महाराज की कृपा तें ल्याऊँ गाजत गराज[3] को,
देव चिर जीजै छिन कीजै छमा अब मोहि,
दीजै धरि आवन सुखेन बैदराज को ॥५९॥
भूतल उपारि डारो हिमगिरि गारि डारो,
लङ्कहि उखारि डारो मारि डारो रावनो.
सिंधु पूरि डारो करि धूरि डारो बिधि,
चकचूरि डारो मेरु भूरि डारो महिरावनो।
भनै 'समाधान' मघवान मीसि डारो,
ससुरान चीसि[4] डारो पीसि डारो अरि आवनो,
द्रोनगिरि ल्याऊँ मूरि जीवन पिआऊँ कहौ
प्रथम जिआऊँ नाथ तेरो मनभावनो ॥६०॥

---

१ मुद्रा, चेष्टा। २ हिम्मत, साहस। ३ गम्भीर शब्द, गर्जन। ४ टीस।

लङ्क में सुखेन धरि आयौ पौनपूत बोल्यो,
समर सपूत देव सोक भटकत हौ,
तेरो दास जावै फुरमायस जौ पावै इतै,
आयसु मै रहैं सब सूर हटकत हौ।
भनै 'समाधान' गढ फोर फटकत अरि—
को न खटकत भुव ताहि पटकत हौ,
सरसो कृसानु बीच जैसें चटकत काज,
कैसें अटकत द्रोन लीन्हे लटकत हौ ॥६१॥
जाइयौ अवध सुधि ल्याइयौ कुसलता की,
लैकै यौ सिखापन भरत मरदान को,
भनै 'समाधान' ध्यान धरि कै सिया के पद,
करिकै प्रदच्छिना प्रनामै भगवान को।
ठोकि सुण्डादण्ड सो उदण्ड दोरदण्ड दाबि
दिसन घमण्ड घोस दौरयौ आसमान को,
घोर गल-गज्जि[1] कै सपूनि मे निमज्जि[2] कै,
समीर-सूनु सज्जि कै तयार भो उडान को ॥६२॥
भेंटि सब साथ फेरि मोछन पै हाथ,
रघुनाथ को नवाइ माथ तेज झलाझल को,
बेग पवमान तें बिमान तें बिमान,
हरिजानहूँ ते मन तें महान महाबल को।

---

१ गर्जकर। २ स्नान करके।

भनै 'समाधान' नभ सत्वर उड़ान तान,
चल्यो हनुमान लग्यो पन्थ मे न पलको,
राछसन रोक्यौ तिन्हैं ठीक रन रोक्यौ कपि,
जाइ कै बिलौक्यो तब लोक द्रोनाचल को ॥६३॥
प्रज्वलित ज्वाल प्रलै-ज्वालन की दीपति,
कै दीपत प्रदीप दीपिकान के बहल[1] की
बारहू बिभाकर उये की झलाझली कैधो,
बलाबली लगी जेब जगी देवदल की।
भनै 'समाधान' हिमवान[2] भामिनी है कैधो,
दामिनी है तेजरासि तारन के झल की,
जकाजकी छोडि टकाटकी अरिनाहि जाहि,
हकाहकी देखि झकाझकी द्रोनाचल की ॥६४॥
सबै गिरिबेली दीपसेली सी नबेली चन्द-
चेली दुतिरेली[3] देख भ्रम सो समेटि[4] कै,
फेर जो पठायो काम जात है नठायो[5],
बन्ध बाँधि ठीक ठायो दै[6] उठायो चरपेटि कै।
भनै 'समाधान' कूद्यौ ककुभनि मूद,
गगन गरज्ज खूद[7] खलन खखेटि[8] कै,

---

१ टोली। २ हिमालय। ३ म ग प्रकाश। ४ झपट कर। ५ नष्ट हुआ जाता है। ६ स्थान देकर (जब किसी भारी चीज को उठाना होता है तो कुछ पीछे हटकर या स्थान देकर फिर दौडकर उठाया जाता है)। ७ उछल कर। ८ सरपट भगा कर।

चल्यो कपि लैकै द्रोनाचल को समूल,
उनमूल भुजमूल सो लँगूर सो लपेटि कै ॥६५॥
चलत समीर-सूनु सुमिर्‌यौ समीर रघुबीर,
हित बीर बढ्यौ बल के बिलास मैं,
बढ़्यौ उमडाय गिरिबरन ढहाय पाय,
पितु की सहाय कपि हरख्यौ हुलास मैं।
भनै 'समाधान' हनुमान रघुरान की,
जुबान जान भान भयो अवध के आस मैं,
दिसन दबावत बलीन बिलपावत,
खपावत खलन उड़ो आवत अकास मैं ॥६६॥
कोसलसुता सो कह्यौ मेरो भुज डेरो डह्यौ,
भीखम भुजङ्ग पैठि भीतर भवन को,
लच्छमन मातु को देखात भो अनैसो भाँति,
राति दुखपन ताके दोष के दमन को।
भनै 'समाधान' सुनि प्रोहित वशिष्ट बीर,
भरत गरिष्ट[1] लै अरिष्ट[2] के समन को,
पास भुजदण्ड के प्रचण्ड चाप दण्ड,
जन्नमण्डल के मण्डप मे मण्डित हवन को ॥६७॥
चन्दन को ईंधन अपूर करपूर-पूर,
तगर[3] प्रसून भरभूर घृत सानि कै,

---

१ अत्यन्त भारी। २ अमगल। ३ एक प्रकार के पेड की लकडी जो बहुत सुगन्धित होती है।

मृदुल मृनाल अभ्रनाल पुण्डरीक[१] मिलि,
देवतुण्ड कुण्ड दई आहुति रिचानि कै।
भनै 'समाधान' हून्यौ नारिकेल जौला,
तौनो पहुच्यौ कपीस धरे भूधर[२] भुजानि कै;
आवत निहाखौ उर असुर बिचाखौ बीर-
भरत हँकाखौ तीर माखौ कान तानि कै ॥६८॥
आयो लखि तीर तीर तेज जगमग्यो मन,
धीर डगमग्यो पै न डग्यौ सो डगन तें,
राम-राम कह्यो छत[३] लह्यौ पै न ढह्यौ अद्रि[२]
गह्यो कपि हद्द हठ हारिल खगन तें।
भनै 'समाधान' बीर भरत के मारे पर,
चण्ड भुज दण्ड बलवान की लगन तें,
भिदुर[४] सो भेदि गिरि भेदि कै गिरायो गिरि,
ऐसो गिरि देह गिखो गिरि सो गगन तें ॥६६॥
बान के लगे ते डग्यो पान सो पवनपूत,
घूमि घूमि घोर घनघेर मै घिरत भो,
लोटत पलोटत करौटि लोटि लोटि नभ,
लोटन कबूतर लौं फेरी लै फिरत भो।
भनै 'समाधान' अभिमानी हनुमान भै भै,
पौन चक्र फेरा लगि ढेरा[५] सो ढिरत[६] भो,

---

१ कमल। २ पर्वत। ३ क्षत, चोट, घाव। ४ वज्र। ५ ढेला। ६ गिर

नग[1] लीन्ह नट नटत[2] नथ ऊपर तै,
ऊपर ते तरवर ह्वै भूपर गिरत भो ॥७०॥
गिर्‍यो कपि बीर लग्यौ भरत को तीर,
मुरछित भो सरीर रनधीर बीर बलवन्त,
बिना बिसराम लेत फेर फेर नाम हाय,
राम हा रमेस हाय लच्छमन हा अनन्त।
भनै 'समाधान' सुनि नाम को जुबान,
अचरज मानि जुरि[3] दौरि आये ढिग[4] सब सन्त,
ठाढ़े सब घेरैं दृग फेरैं कपि नेर[4] जन,
बेर बेर टेरैं पै न हेरै[5] नक हनुमन्त ॥७१॥
पुष[6] सेष सायक ललाट लग्यौ छत पर्‍यौ
छिति[7] मुरछित दरसाइ दन्त पीसनै,
बिकल कलन्दर[8] सो बन्दर निहारि कर्‍यौ,
मन्दिर मै मन्दर[9] भरत अबनीस नै।
भनै 'समाधान' रघुबीर-जन जानि परे,
पग सब आनि सनमान पुरो दीसनै,
घरी टरी नाहि खोद खरी हरी जरी करी,
औषद गिरी की हरी मुरछा मुनीस नै ॥७२॥

---

१ पहाड़। २ अभिनय करते हुए। ३ जुड़कर, इकट्ठा होकर। ४ निकट। ५ देखे। ६ दुष्ट। ७ भूमि, पृथ्वी। ८ बन्दर नचाने वाला मदारी। ९ पर्वत।

देखि अकुलात आनगात जनजात बात,
जात यौं बतात माहि जाने रामदल को,
क्रम सो पवित्र कह्यो राम को चरित्र बीर,
घातिनी विचित्र घाय आयो महाबल[1] को
भनै 'समाधान' माहि प्रभु ने पठायो सब—
काज तू नठायो[2] ह्वो लचार भयो ललको[3],
राखिये गरूर मिटै लखन करूर[4] रघु-
राज रूर भेजिये जरूर द्रोनाचल को ॥७३॥
बैन सुनि आँसू चले चखन हहाय हाय
लखन लखन कहि मोहि पर्यौ वर पै,
बोल्यो बीर चेत तोहि प्रभु के निकेत भेज,
भूधर समेत कहु कौन हेतु डरपै[5]।
भनै 'समाधान' हनुमान के हिये मे,
अभिमान जान रान तो कमान तान कर पै,
दोना सा उठाय द्रोनाचल को टिलाना कपि,
राम को खिलोना पौनछौन[6] धर्यौ सर पै ॥७४॥
गिरि लीन्हे गिरि ते गरिष्ट कपि बैठो जानि,
खैंचो बान पैठो गुन[7] मध्य चलाचल को,
उतर्यौ परिच्छा राम इच्छा सम लेखि पेखि,
सिच्छा भारी भरत भुजान भूरि जल का।

---

१ लक्ष्मण। २ नष्ट किया। ३ लालायित ४ क्रूर। ५ डरते हो। ६ हनुमान। ७ रस्सी।

भनै 'समाधान' बन्दि सबन सँदेस लैकै,
कुसल निदेस[1] दैकै कैकै आप रलको,
रूँधो रुकै कौन को समूधो[2] करि काज बीर,
सूधो चलो पौन को सपूत रामदल को ॥७५॥
दरबर दौर रोक्यौ सम्बर तीर हरि-
कथा हरबर सुनी जाय पै मुदित भो,
मन्द जानि सोहत कपट मुनि सीख बोलो,
दीख दिग भाग तौ दिवाकर उदित भो
भनै 'समाधान' कपि बिलख[3] बिलम्ब लखि,
रिपु[4] माया भूल छिन भूल कै रुदित भो,
जन्छन सुजान गुरु दच्छिना बिचार पर-
दच्छिना दै कर कर दच्छिना मुदित भो ॥७६॥
मीड्यो[5] महाकाल सो कराल बन्धकाल प्रलै
काल सो अकाल परी कालनेमि माथ पै,
भनै 'समाधान' कोटि गन्ध्रबनि[6] गञ्ज मद,
भञ्ज करि पथिन के साथ मै सनाथ पै।
ग्राही को पछारि करि छतिन को छार मारि,
मायाबी मुछार[7] कपि कहै रघुनाथ पै,
अरिन-भिरौना कपिकटक-निरौना,
यह आयो पौनछौना[8] लिए द्रोनागिरि हाथ पै ॥७७॥

---

१ निर्देश। २ सम्पूर्ण। ३ होकर ४ शत्रु। ५ मसल डाला। ६ गन्धर्वों के। ७ नाशकर। ८ हनुमान।

पिङ्ग-चखवारो जनपैज रखवारो बज्र
दन्त-नखवा। जुद्ध मखवारो जूप है,
बन्दर-अनी[1] को जोम नीको रच्छपाल,
अञ्जनी को कुलचन्द रामचन्द को चमूप[2] है।
भनै 'समाधान' लङ्कपुर को जरैया लङ्क-
पति सो लरैया उद्भट भट भूप है,
पौनपूत पहुच्यौ कटक उपकण्ठ जो,
सुकण्ठ को सहैयाऽसितकण्ठ[2] को सरूप है ॥७८॥
बन्दीभूत अरिहू अनन्दीभूत रघुबर,
मन्दीभूत मेघनाद सोध सुधि पाये तें,
भनै 'समाधान' दिवस्वच्छीभूत भानु तेज,
तुच्छीभूत रच्छ गढ लच्छन ढहाये तें।
दङ्गीभूत दसमुख तङ्गीभूत तरज,
उमङ्गीभूत जानकी अङ्गी जस जाये तें,
भङ्गीभूत असुर अभङ्गीभूत रामदल,
दङ्गीभूत सुर बजरङ्गीभूत आये तें ॥७९॥
दुबिन्द मयन्द[3] आदि मर्कट कटक चौंडी[4],
तिन मैं चटक बेअटक छिति[5] छानि कै,
भरत को भेंटि मनुजाद-कुल मेटि जुद्ध,
जस को समेटि फेरि बिक्रम को ठानि कै।

---

१ सेनापति। २ शङ्कर। ३ बन्दरों के सेनापति। ४ प्यारा। ५ पृथ्वी।

भनै 'समाधान' आयो बीर रनबीर नीको,
दूरिही ते करत प्रनामै सीस मानिकै.
बीररस भर्यौ तनसार भार भर्यौ,
ले लँगूर गिरि बर्यौ पर्यौ रामपद आनि कै ॥८०॥

द्रोनगिरि ल्यायो पौनपूत सिर नायो आय,
भायो यौं सुनायो कपिराज[२] रघुराज को,
भनै 'समाधान' कन्धकाली को पछारि आयो,
डारि आयो खेत कालनेमी सिरताज को।
रिपुमद[३] गारि[४] आयो सुजस बगारि[५] आयो,
अवध जोहारि आयो भरत समाज को
बिघन बिडारि आयो[६] असुर सँघार आयो,
रारि आयो जीति यों सुधारि आयो काज को ॥८१॥

सुन्यो दीनबन्धु बालिबन्धु सो प्रबन्ध कर,
कन्ध पग पर्यो देखि बोले कपिराव सो,
बिबिध प्रकार एक एक उपकार पर,
प्रान मैं निछावरि किये हैं चितचाव सो।
और अनगनी घनी तो सो बनी हाल ताके,
रिनी हम तेरे प्रभु कहि के सुभाव सों,
सुखन समेटबे को सोक मेटबे को,
हनुमान भेंटबे को भगवन्त उठे भाव सो ॥८२॥

---

१ आक़र। २ सुग्रीव। ३ शत्रु का घमण्ड। ४ नाश कर दिया। ५ फैलाना। ६ दूर कर दिया।

उठे राम देखि कपि बिनती बखानी जीति,
जानकी न आनी नाथ कहा मजबूत मै,
बिन्ध्य करि धूरि सिन्धु पूरि नहि आयो,
चकचूरि नहि आयो मै त्रिकूटाचल तूत मै।
भनै 'समाधान' भुज बीसहू न ल्यायो काटि,
सीसहू न ल्यायो दससीस के अकूत मै,
बाँधि बडी थाप आप कोजत मिलाप करी—
आपके मिलाप जोग कहा करतूत[1] मै ॥८३॥
जनमतही ते अंजनी को महाबीर नभ—
कूद्यौ रनधीर बल बिक्रम उभर को,
मारतड मडल अखण्ड मुख मेलि लियो,
झेलि लियो जानै तन बज्र बज्रधर[2] को।
भनै 'समाधान' ऐसो पौन को कुमार गिरि—
द्रोन को लियायौ ताकी कौन सी उकर[3] को,
लेपन लगायो बेगि बीर को जगायो, सोर—
कटक मैं छायो आयो दूत रघुबर को ॥८४॥
आयो बजरग अग लेप न लगायो जंग,
जालिम जगायो खुली मुरछा रुठत[4] भो,
घाय पूरि आयो काय ज्यौं को त्यौं सुहायो,
द्रोनबल्ली को प्रभाव संग पौरुख पुठत[5] भो।

---

१ काम। २ इन्द्र। ३ बडाई। ४ दूर हुई। ५ पुष्ट हुई, बढी।

भनै 'समाधान' गाज्यौ धरनी-धरैया[१] सुनि,
ससकि ससक लंक-पतिहू लुठत[२] भो।
राम रंजिबे[३] को दल-शोक गंजिबे[४] को,
मेघनाद भजिबे[५] को काल क्रुद्ध सो उठत भो ॥८५॥
उठो बिकराल इन्द्रजीत को सो काल रन,
रोस भरयो[५] लाल जोर ज्वालन जगायौ है,
बोल्यौ सिंहनाद करि धनुष को नाद कह्या,
छुद्र मेघनाद छल छत को न गायौ है।
खदिर अँगार सो हलाहल-अगार सो,
अँगार कसे अच्छ ओज उग्र उमगायो है,
मेटि दुख भ्रातै भर भुजन समेटि,
उतकंठ सो समेटि राम कंठ सो लगायो है ॥८६॥
दसमुख-नन्द[६] रमानन्द को सुघोर जुद्ध,
गिरे दुहुँओर भट[७] कौन गने केते हैं,
भनै समाधान' उठे बाँदर अमान[८] सूधे,
जूझे जातुधान[९] भए मुक्त सब तेते हैं।
राम भक्त नक्त[१०] परे समर असक्त सक्ति,
ज्वाल के जलूस जोग जरे कपि जेते हैं,

---

१ लक्ष्मण। २ गिर गया। ३ प्रसन्न करने के लिए। ४ नाश करने के लिए। ५ क्रोधपूर्ण। ६ मेघनाद। ७ वीर। ८ अपरमित। ९ राक्षस। १० सन्ध्या का समय।

अवनि-गिरैया गिरि द्रोन के दरस पुन्य,
पौन के परस[१] तन कौन के न चेते हैं ॥८७॥
उहाँ दसकन्ध द्रौनाचल को प्रबन्ध सुनि,
चेत्यौ रामबन्धु जानि चिन्ता सो चपत भो[२],
महाकाय निश्चर-निकाय[३] अधिकाय अति,
काय त्यौं अकपन सो कपन कपत भो।
भनै 'समाधान' पितु आयसु को मान,
मेघनाद बलवान घमसान को थपत[४] भो,
साधे करबालिका[५] चढाई मुंडमालिका,
निकुभिला[६] मे कालिका की मालिका जपत भो ॥८८॥
इहाँ होत प्रात बीर बका[७] राम भ्रात मेघ-
नाद के निपात हेतु[८] खेतु को गजत[९] भो,
सीस जगदीस को नवाइ परिपाइ दै,
परिक्रम त्रिबिक्रम लो बिक्रम बजत भो।
लच्छमन पच्छ चल्यौ अच्छ को बिपच्छ तिमि,
रिच्छपति रच्छपति पच्छ ना तजत भो,
लच्छन अभग[१०] कपि-रिच्छ दलसग रन—
रग की उमग सफ जग[११] को सजत भो ॥८९॥

---

१ स्पर्श। २ दब गया। ३ निश्चर समूह। ४ तत्पर हुआ। ५ खड्ग। ६ लका के पाश्चम की एक गुफा जिसमे देवी के सामने यज्ञादि करके मेघनाद युद्ध की यात्रा करता था। ७ जबरदस्त। ८ मारने के लिये। ९ युद्ध क्षेत्र को चले। १० अटूट, अपार। ११ युद्ध के लिए।

छप्पै

पैठे सप्त पताल लुक्कि[1] बैठे सुरेस तट[2]।
करै कोटि मायान धरै पायान[3] कोटि भट ॥
जपै कोटि भैरवन कोटि काली अवराधय।
जत्र मत्र रचि कोटि कोटि रन जज्ञहि साधय॥
उड्डुय अकास[4] बुड्डुय समुद[5] सत सकर गुड्डुय[6] जदपि।
रघुबीर सपथ देखत द्दगन[7] हतौं[8] इद्रजीतहि तदपि ॥९०॥

घनाक्षरी

सज्जि गलगज्जि बोल्यौ लच्छमन बोल खोल्यौ,
सपथ अडोल लखि मोहि कौन लचिहै,
देखतही दैहौ इन्द्रजीत को ढहाय[9] जाय,
जोपै सत सकर सहाय आय रचिहै।
भनै 'समाधान' मैं जहान-सघरन जैहै,
कौन की सरन सठ कौन तेज तचिहै[10],
रामचन्द की सौं[11] करै कैयौ[12] छल छन्द मति-
मन्द आजु नद दसकध को[13] न बचि है ॥९१॥
पैज[14] करि क्रुद्ध चल्यौ रामानुज सुद्ध सुनि-
जुद्ध को पयान मघवान असकत[15] है,

---

१ छिपकर। २ इन्द्र के निकट। ३ चरण पकडे या शरण ले। ४ आकाश में उडे। ५ समुद्र में डूबे। ६ दल बाँध कर एकत्र हो। ७ आँख से देखते ही। ८ मारूगा। ९ गिरा दूगा। १० जलेगा। ११ सौगध। १२ कितने भी। १३ मेघनाद। १४ प्रण करके। १५ डरते हैं।

फटकत फद दितिनद[१] लटकत रवि,
चद चटकत नभ पथ सटकत[२] है।
भनै 'समाधान' हुड़कै न महेसान,
कुडकै न त्यौ कृसान जमसान फसकत[३] है।
धसकत[४] धक्कन धरा को धारि न सकत,
ससकत सेस[५] कमठेस कसकत[६] है ॥९२॥
फन-पति-फन फुफकान से फटे से जात,
ऊचे उचके से जात औचके अमर[७] है,
खल खलमलत दयन्तन[८] दलत बीर,
लच्छन चलत जब कोप को उभर है।
सिधु भूरि जात[९] मघवान मूरि जात,
दनुजात दूरि जात पूरि जात दिनकर है,
कच्छप[६] कहलि जात दिग्गज[१०] दहलि जात,
हलि जात महि मलि जात महिधर[११] है ॥९३॥
मेघनाद जाय कै निकुभिला अरभ जज्ञ,
भजिबे[१२] निमित्त लै कपिद्र राय राम दूत[१३],
दन्त की दपेट सो लॅगूर की लपेट सो,
चरन्न[१४] की चपेट सो चपेट कै चपेट तूत।

---

१ राक्षस। २ छिप रहे है। ३ यम की शान फीकी पड रही है। ४ दब रही है। ५ शेषनाग रो रहे है। ६ कच्छप भगवान कराहते हैं। ७ देवता। ८ दैत्य। ९ सूख जाता है। १० दिक्पाल। ११ शेषनाग। १२ नष्ट करने के लिए। १३ हनुमान। १४ चरण।

जध की झपेट सो खखेट[1] की ससेट[2] सो,
समेट रच्छ पेट सो रपेट मीडि[3] कुंभभूत,
जाग[4] भंग औन को सुभौन को बनाय राम,
भौन को प्रदीप गज्ज पौन को सपूत पूत ॥९४॥
जज्ञ भंग देखि कै उठो अभंग इन्द्रजीत,
क्रुद्ध कै बिरुद्ध कीसवृन्द[5] मर्द मर्द धाय,
भच्छियो प्रतच्छ लच्छ रिच्छ को समेटि लच्छ,
रच्छ अच्छ कै बिपच्छ नेकु ना करी सहाय ।
उच्चरै 'समानधान' मल्लजुद्ध ठानि द्वै,
भिरे जुवान भान के समान आसमान जाय,
बिध्य सो मदंध बंध गंधवाहनंद[6] लै,
कपीन के प्रबंध दीनबंधु बंधु पास आय ॥९५॥
उडी धूरि धायौ पंक[7] पारापार फूटि टूटि,
हय[8] खुर थार त्यौ पहार छारकन है,
गजहलका[9] की हलकार अलका[10] लौं,
पलका[11] लों महि[12] मचत[13] नचत खलगन[14] है ।
सज्जि[15] दल आयौ गल गज्जि[16] इन्द्रजीत ऐंड़[17],
उमड़त कमठ[18] कठोर पीठ पन है,

---

१ दबाना, घायल करना । २ पीछा करना, मारना । ३ मसल कर । ४ यज्ञ । ५ बाँदरी सेना । ६ हनुमान । ७ कीचड का समुद्र । ८ घोडे । ९ एक प्रकार का लोहे का अस्त्र जिसे हाथी घुमा कर मारता है । १० इन्द्र-पुरी । ११ चारपाई । १२ पृथ्वी । १३ मचकना । १४ दुष्टजन । १५ सजा-कर । १६ हुकार कर । १७ ऐंठकर, अभिमान पूर्वक । १८ कच्छप भगवान ।

मैं मैं परैं भूमिभार दिग्गज दँतारे[1] भारे,
नै नै परै[2] फसकि फनीपनि के फन हैं ॥९६॥

हरिगीतिका

इत मेघनाद निनाद सज गज सिंहनाद उमडियं[3]।
अतिकाय सुंभ निकुंभ कुंभ महोदरादि झुमडिय[4] ॥
सुरसेन कंपन भुवन चंपन भट अकंपन मडियं[5]।
दल कोटि लच्छ सहस्र रच्छ बरुथ्थ[6] जुथ्थ पछंडिय ॥९७॥
मदअंध[7] शिखर बिंध्य से चले ढकिलि[8] सिंधुर सज्जि कै।
जिन की गरज्ज तरज्ज सुर गज तजत लज्जित लज्जि कै ॥
तिमि घुमड़ घोरन की घनी छबि छनी काहि भनी परै[9]।
निसिचरअनी बनि कै बनी रन की मनी न गनी परै ॥९८॥
सज रथन की सुर पथन की छबि कथन की सरसत है।
हिय मान हयदर[10] प्रबल पैदर अति अभय दरसत[11] है ॥
उमडे उमग अभंग[12] दल चतुरंग[13] जंग उमाह[14] सो।
सेना तयार सवार ह्वै सरदार सज्जि सनाह सो ॥९९॥
इक सिंह पै नरसिंह चढ़ि इक महिष[15] एक मतंग[16] पै।
इक गवै[17] पै इक नकुल[18] पै इक सकुल[19] पै सकुरंग[20] पै ॥

---

१ दांतवाले। २ नीचे हो जाते हैं। ३ उमडना, फैलना। ४ एकत्र होकर बढे। ५ सुशोभित हुए। ६ दल। ७ मदान्ध। ८ चढाई। ९ किससे कही जा सकती है। १० घुडसवार। ११ दिखलाई पडते हैं। १२ भंग न होने वाला, अपार दल। १३ चार प्रकार की सेना, वह सेना जिसमे हाथी घोडे पैदल और रथ हों। १४ उत्साह से। १५ भैंसा। १६ हाथी। १७ नीलगाय। १८ नेवला। १९ राक्षस। २० हरिन।

इक चक्र[१] पै इक नक्र[२] पै इक मक्र[३] पै सुतुरग[४] पै।
इक कर्भ[५] पै इक सर्भ पै खर अर्भ[६] पै सतुरग[४] पै ॥१००॥
धौंसा धुकारन भट हुकारन परि पुकारन धरनि मैं।
बढि धूरि धूंधनि मूँदि रविदल को सको किमि बरनि मैं॥
उमड़ी बडी भट भीर तहँ समड़ी भराभर सोर की।
घुमडी घनी घन की घटा जनु छुटा सिंधु हलोर की॥१०१॥
इत बीर लच्छन पिल्यौ तच्छन[७] कीस लच्छन[८] गज्जिय।
रनसील अंगद नील नल केसरी तज्जन तज्जिय॥
बडे जामवंत दुरंत दल हनुमंत आदिक हुंकरे।
गिरि बिटप लै भट प्रलय लखि जनु फनी फनधर फुंकरे॥१०२

दोहा

समरदच्छ लच्छन भिल्यौ उत रच्छस बलवान।
उदभट कौनप[९] कपिन को मच्यो घोर घमसान॥ १०३॥

छंद त्रिभंगी

इत लछिमन बीरं पिलि रनधीरं कुप्य[१०] गहीरं जुद्ध रच्यो।
उत दसमुखनंदन सुभट बिलंदन[११] उमडि अमंदन समर सच्यो[११]॥
दुहु दल भट कोपे रन रस रोपे चित चट चोपे उमग जगे।
जनु प्रलय अरोपे[१३] जम जग लोपे बढि रन गोपे लरन लगे॥१०४॥

---

१ चाक। २ घडियाल। ३ मगर। ४ घोडा। ५ ऊंट। ६ गदहा। ७ तत्क्षण। ८ लाखों। ९ राक्षस। १० कुपित। ११ सम्मिलित हुआ। १२ नाशक। १३ आरोपित करना, उपस्थित करना।

भट मरकट[१] धावें गिरिन्ह चलावें अरिन मिलाव धरनितलं।
खर नखर चटच्चट दंत खटक्खट परत फटफ्फट रजनिचलं[२] ॥
गहि कपिन कटक्कट झटकि धटग्घट पिवत गटग्गट रुधिर गल।
एक एक्कन जुट्टहि भुव भट लुट्टहि कटि तम टुट्टहि समरथल[३] ॥१०५॥
नक[४] दिक्खत बुट्टहि[५] बच भुज चुट्टहि रद रद[६] फुट्टहि दीन रट।
धरि एक्कन कुट्टहि[७] प्रान सछुट्टहि[८] जोगिनि घुट्टहिं श्रोनघट[९] ॥
इक बाजिन[१०] बमकै झलसे झलकै घन से घमकै रुपि रन मै।
तन त्रान[११] अभगन पहिरि सुअगन उमड़ि उमगन[१२] भरि मन मै।१०६।
बानन की सकिसकि आवन तकितकि, उर मै धकिवकि[१३] धरत नही।
रन रोसन[१४] छकिर त्रानन फकि फकि, धावत थकि र परत मही[१५] ॥
वह श्रोनित चक चक घावन भक भक, मारन ठक ठक रुपि रनमै।
घालै तन तमकैं तेगन जमकैं, दामिनी दमकैं जनु घन में ॥१०७॥
बोलै कपि हरि हरि बाहैं भरि भरि अत्रन करि करि गर्जि अरैं[१६]।
एकै नट लरि लरि सत्रन झरि झरि कटि सिर ढरि ढरि[१७] धरनि परै ॥
दै दै कर ढालै सग उछालै बल भरि घालैं कोप सनै।
पग पछलि न चालैं छत पन पालैं उरन उछालैं अरिन हनै॥१०८॥
जनु पावक[१८] लपटैं इक इमि झपटैं सुभटन चपटै दावि तरैं।
एकन इक झपकैं पट से पटकैं नभ में फटकैं अटकि मरै ॥

---

१ वीर बन्दर। २ निश्चर। ३ समरक्षेत्र में। ४ नाक। ५ कटा हुआ। ६ दाँत दाँत। ७ मरते हैं। ८ छूटता है। ९ लहू का घडा पीती हैं। १० घुडसवार। ११ कवच। १२ उत्साह से भरकर। १३ डर, भय। १४ युद्ध का क्रोध। १५ पृथ्वी। १६ अडते है। १७ गिर कर। १८ अग्नि।

एक हथ्थनि[१] हथ्थ[२] हवथ्थनि वथ्थह[३] मथ्थनि मथ्थह[४] बीर लरैं।
इक सेलह उठेलन खेटक[५] खेलन खञ्जर पेलन पेलि परैं[६] ॥१०९॥
कटि हाड करक्कत[७] खग्ग खरक्कत[८] गात गरक्कत[९] वार करै।
टरकैं न टरक्कत ठेलि ठरक्कत मुड ढरक्कत[१०] भूमि झरैं ॥
तन-त्रान[११] तरक्कत[१२] थलन थरक्कत देह दरक्कत[१३] दिल न डरै ॥
'समाधान' हरख्खत[१४] देव बरख्खत पुहुप[१५] झरख्खत[१६] जै उचरै ११०
मरदान[१७] मरक्कत[१८] भयन[१९] भरक्कत[२०] बचिन बरक्कत[२१] उमडि परैं॥
कटि रुंड फरक्कत जीव सरक्कत[२२] कछु न हरक्कत[२३] स्वर्ग धरै ॥
करि दिध्य[२४] उमगन भरि रस रगन बिपति वरगन बीरबरैं।
जे जे सफ जगन तेज तरगन कटि अँग अगन भटन बरै ॥१११॥
जहँ सेलह धमकन तीर तमकन चपत्त चमकन तेगन की।
खर नखर झमकन दत दमकन गिरि तरु ढंकन बेगन की ॥
कटि कटि भट टुट्टहिं महि पर लुट्टहि प्रान सुछुट्टहि स्वर्ग चलै।
लखि इमि घमसानै देव बिमानै चित्र समानै रहित हलै ॥११२॥
दुहुँ दल हठधारी रन रचि भारी खगम सुहारी भार भरी।
काली किलकारी दै करतारी सकर तारी उमचि[२५] परी ॥

---

१ हाथ। २ पकड कर। ३ चपेटा मारकर। ४ सिर से सिर टकराकर, गुत्थमगुत्थ। ५ ढाल। ६ घुसेडे देते हैं। ७ कडकता है। ८ खडकत। ९ क्षत होना, नष्ट होना। १० गिरता है। ११ कवच। १२ तडकता है। १३ फटना, विदीर्ण होना। १४ हर्षित होते हैं। १५ फूल। १६ बरसाते हैं। १७ बीर। १८ मुडते हैं। १९ भय से। २० भागते है। २१ अधिकता। २२ निकलता है। २३ हर्ज। २४ धैर्य। २५ उछल पडी।

तेहि कौतुक देखन केलि बिसेखन मोद अलेखन[1] भाव भले।
नदी चढ़ि नदीनाथ[2] अनदी गन जुत चदी चाह चले॥११३॥
भैरव करतालन भूत बेतालन तह खट तालन जेब जगी।
मिलि भूत पिसाचन लखि रन माचन जुग्गिनि[3] नाचन नचन लगी॥
धरमालन सीसन गुहि भट सीसन सम्भु असीसन देत फिरैं।
रुधिरामिख[4] मीसन खप्पर खीसन खाय खबीसन खगखि[5] भिरैं[6]॥

दोहा

देत असीस गिरीस तहँ पहिरि सीस मय माल।
डडकारत[7] चडी फिरत बमकारत बेताल॥११५॥

छद अमृतध्वनि

धनि धनि लच्छित लच्छमन रच्छसुवन रन जुट्ट[8]।
कपि कौनप[9] सग्राम हुव देखत महि भट[10] लुट्ट[11]॥
लुट्टत महि भट टुट्टत अँग तन छुट्टत[12] एक न बुट्टत एक हन।
हथ्थ झटक समथ्थन[13] पटकत मथ्थन गटकत वथ्थत करजन॥
पगग्गहि कर खगद्दलत सुअगचल चलत उमगग्त भरमन।
ढडद्दुति रन गुंड गिरत भसुंड भभकत झुंड ध्वनि धनि॥११६॥
घहरत लखि घननाद दल घन घुमडत जिमि पिच्छ[14]।
करि भच्छन रच्छन कियो रिच्छच्छय परतिच्छ॥

---

१ अलक्ष्य। २ शकर। ३ योगिनी। ४ खून और मास। ५ उमग से भर कर। ६ लडते हैं। ७ डकारती हुई। ८ जुटना, मुकाबले में खडा होना। ९ राक्षस। १० योद्धा। ११ गिर पडे। १२ शरीर छूटता है। १३ समर्थों को, वीरों को। १४ मोर।

रिच्छच्छय परतिच्छन्छय जिमि रच्छच्छ इरत।
लच्छन सुभट सुलच्छन उमडि तलच्छन पौन बिचच्छन[१] फहरत॥
जुद्धद्धनु धरि क्रुद्ध करि सुबिरुद्धदल अनुरुद्ध भझहरत।
नट्टत्पसु उद्भटम्भिरि उदघटक्किय घनघटघ्घहरत ॥११७॥

छन्द महानाराच

गरज्जि सिंहनाद लो निनाद मेघनाद बीर,
कुद्ध मान सान सो कृसानु-बान[२] छड्डिय[३],
लखी अपार तेजधार लच्छन कुमार बारि-
बान[४] सो अपारधार बर्षि ज्वाल खड्डिय[५]।
उडाय मेघमाल को उताल[६] रच्छपाल-बाल,[७]
पौन बान अत्र[८] घाल कीस जाल दड्डिय[९],
भयो न होत होयगो न ज्यौ अमान इन्द्रजीत,
रामचन्द्र बंधु सो कराल जुद्ध मड्डिय[१०] ॥११८॥
उडत मर्कटावली विचारु मारुतावली,
सरावली[११] चलाय रच्छसावली[१२] सँघारिय,
निसक लकनाथनद इन्द्रबान पूरि भूरि,
अद्रि[१३] पूरि चूरि कै गरूर गाज[१४] डारिय।
परत[१५] बज्र देखि राम बन्धु ब्रह्म अत्र[१६] मोष[१७],
रच्छ ओस अडकोष चण्डघोस[१८] धारिय,

---

१ विलक्षण। २ अग्निबाण। ३ छोड़ा। ४ जलबाण। ५ खडित किया। ६ जल्दी से। ७ मेघनाद। ८ अस्त्र। ९ दड दिया। १० घोर युद्ध में लग गया। ११ बाणों की अवली। १२ राक्षसदल। १३ पर्वत। १४ वज्र। १५ पडते हुए। १६ ब्रह्मास्त्र। १७ छोडकर, मोक्ष कर। १८ घोर गर्जन।

जरत जातुधान जान रावबाधिपत्ति अत्ति,
पारपत्ति[1] ह्वित पासुपत्ति अत्र पारिय[2] ॥११६॥
घलत रुद्रबान कोटि रुद्र कुप्यमान वे—
दिसान मै दिसान में कृसानु धार लग्गियं[3],
रमेस बधु क्रुद्ध ह्वै रमेसबान[4] चोट घल्ल,
कोटिकाल रुद्रभग लीन कै उमग्गिय।
महाप्रलै कराल काल ज्वाल जाल झोक कै,
बिलोकि वोक बोक मै त्रिलोक लोक डग्गिय[5],
बिपच्छ पच्छ भच्छ भच्छ रच्छ कच्छ[6] धच्छ[7]
रच्छ रच्छनन्द को सो बच्छ फोर जग्गियं ॥१२०॥
करोर रच्छ रोर बच्छ फोर बाहु तोर घोर,
घोर कै मरोर भूपताल आसमान भो,
जहान मैं अकंपमान कपमान कपमान,
कै दिसान वे दिसान सुप्रकासमान भो।
अखण्ड चण्ड मारतण्ड मण्डलै उमण्डि कै,
उदण्ड ज्वालमाल मण्ड जात यौं प्रमान भो,
अमान[8] राम बान कोटि भानु को प्रभान कोटि,
कल्पक[9] कृसानु ता समान भासमान भो ॥१२१॥

---

१ रक्षार्थ। २ पशुपतास्त्र छोडा। ३ अग्नि की बाढ आ गई। ४ रमेश बाण। ५ डिग गया। ६ राक्षसों की कतार। ७ डरकर। ८ अनत। ९ काल का एक विभाग जिसे ब्रह्मा का एक दिन कहते हैं और जिसमें १४ मन्वंतर या ४३२०००००० वर्ष होते हैं।

मची सु लङ्क हाय हाय जोर ज्वाल छाय छाय,
रामबान धाय धाय रच्छ-बर्ग[1] भर्जियो[2] ,
उडाय कुंभ[3] मस्तको प्रहस्त को निरस्त[4] कै,
समस्त जोरजस्त[5] जेरजस्त[6] कै बिसर्जियो ॥
अकपनादि[7] वृन्द मीस बीसबाहुँ गर्भ[8] पीस,
कट्टि मेघनाद पीस पास आइ अर्जियो[9] ।
अजीत बंधुराम को सुजीत इन्द्रजीतको,
अजीत इन्द्रजीत जीत नाम पाय गर्जियो ॥१२२॥

महेन्द्र जीत गुराड काटि रच्छ मारि मुड पाटि,
लङ्क के कपाट फाटि डाटि जुत्थपावली ।
सुरान्त कै पछारि कै नरान्त कै सँवारि कै,
निकुंभ कुभ मारि कै बिडारि रच्छसावली ॥
भवन्तमान जुद्ध[10] नीति लच्छन लसत गर्भ,
गर्भवन्त गजि कै गजत[11] मर्कटावली ।
बजन्त व्योम दुदुभी जजत[12] पुष्पवृष्टि सों,
श्रजत[13] दिव्य अस्तुती समस्त देवतावली ॥१२३॥

---

१ राक्षसवर्ग । २ काटा । ३ कुभकर्ण । ४ शिथिल । ५ वीर । ६ परास्त । ७ रावण का अनुचर एक राक्षस जिसने खर के बध का वृत्तान्त उससे कहा था । ८ रावण पुत्र । ९ अर्ज किया । १० ठनी हुई लडाई । ११ प्रसन्न होता है । १२ जय जयकार युत । १३ सुनाती है ।

छन्द कमला

गत्थन[1] अकत्थ[2] समरत्थ दसरत्थसुत,
हत्थन समत्थ दसमत्थ-सुत मत्थरन।
सद[3] छननद हन[4] नद अनहद बल,
सदल[5] बिरद[6] अनबद जस गद बन॥
मदल न नदन मरद नगरद कर
रद दर हद दल-बदल मरुदलन।
धान समरच्छ जन कच्छ जन अच्छ मन,
दच्छ जय लच्छ मन लच्छ जय लच्छमन॥१२४॥

छन्द अमृतध्वनि

जय जय लज्जित लच्छमन लच्छन रच्छ सुखड्ड[7]।
जीत्यो सुर-पति-जीत कहँ मण्डित[8] प्रधनु[9] प्रचण्ड॥
मण्डित प्रधनु प्रचण्डित प्रति भट दण्डित दुवन[10] उदण्डित प्रतिभय।
दण्डद्दुत भुजदण्ड द्वय बलबण्डकर बलबण्ड[11] कर छय[12]॥
छण्डत[13] सर लखि गण्डग्गजि गिरि चण्डक्कुनप[14] विहण्डग्गतर्रय।
दंडित त्रिदस उदडित प्रगट अखण्ड ध्वनि ब्रह्मण्ड जय जय॥१२५॥

दोहा

जै जै धुनि छावहि गगन गावहि मंगल गान।
बरसावहि सुर मुनि सुमन बर पावहि 'समधान'॥१२६॥

---

१ गाथा में। २ अकथनीय। ३ तत्काल। ४ मार कर। ५ दल के साथ। ६ सुयश। ७ सुन्दर। ८ सुशोभित। ९ धनुष। १० राक्षस। ११ बली। १२ नाश। १३ छोडते हैं। १४ बली राक्षस।

छप्पय

जै जै सुर उच्चरहि वृष्टि कुसुमावलि सज्जहि।
जामवन्त हनुमन्त अगदादिक भट गज्जहि॥
इन्द्रजीत कहँ जीत चल्यो सौमित्री[१] हितकरि।
कट्टि सीस दससीस नद को ईस अग्र धरि॥
जुग जोरि पानि 'समधान' कहँ सीस आनि पद पक जहँ।
करि जस गहीर रनधीरबर मिल्यौ आनि रघुबीर कहँ॥१२७॥
जय लछिमन रनधीर बीर बीराधि बीरबर।
जय उदण्ड भुजदण्ड चण्ड कोदड[२] दड धर॥
जय अमन्द आनन्द कन्द खलफन्द निकन्दन।
कृत बृंदारक बृंद चरन अरबिंदन[३] बदन।
जै जै समत्थ दसरत्थसुत हत्थ मत्थ दस मत्थ-मुत।
जनबानि जानि 'समधान' सिर धरहु पानि बरदान जुत॥१२८॥

दोहा

लखनसतक कलिदुखहतक[४] कतक बखानै कोइ।
बीर श्री सीयरामपद अचल प्रीति दृढ़ होइ॥

इति श्री रामखण्डलपथे शिवाशिवसंबादे लछिमनसतक
समाधान कवि कृतं समाप्तं॥

---

१ लक्ष्मण। २ धनुष। ३ कमल। ४ नाशक।

कुछ अनूठे काव्य ग्रंथ

काव्य निर्णय

कविवर भिखारीदास जी एक प्राचीन कवि हुए हैं जिनके गये हुए छन्दार्णव, शृंगार निर्णय आदि ग्रन्थ प्रसिद्ध और प्रामाणिक हैं। उन्हीं का बनाया हुआ यह काव्य निर्णय ग्रंथ है। इस पुस्तक में काव्य का समस्त वर्णन आ गया है। काव्य किसे कहते हैं, उसमें क्या क्या होना चाहिए, उसकी रूप कैसी होनी चाहिये उसके गुण दोष क्या क्या हैं, लक्षण अलंकार और भाव क्या है रस क्या है, और कैसे होता है, सारांश यह कि काव्य के विषय की कोई भी बात इससे छूटी नहीं है। यह ग्रन्थ महाराज अयोध्या तथा महाराज सूर्यपुरा के खास लाइब्रेरियों से प्राप्त कर तथा बड़े परिश्रम से शोध कर छापा गया है। पृष्ठ सख्या २४० । मूल्य— १)

जगत् विनोद

कवि पद्माकर का नाम भला कौन काव्य प्रेमी न जानता होगा। एक तरह पर ये कविता के सम्राट हो गये हैं क्योंकि इनके काव्य की सी सरलता मधुरता और भाव दूसरे कवियों में आता ही नहीं। इसीसे इनके रचित कवित्तों की बड़ी खोज है। उत्तम काव्य के प्रेमियो को तो यह पुस्तक अवश्य रखनी चाहिये। दूसरा संस्करण, मूल्य— ॥)

पद्माभरण

कवि श्रेष्ठ पद्माकर कृत अलङ्कार का अपर्व ग्रन्थ। इसमें कवि श्रेष्ठ ने दोहो में बहुत ही सक्षेप के साथ अलकार का वर्णन किया है और उसका उदाहरण भी दिया है। इस पुस्तक को

ध्यान पूर्वक एक बार पढ लेने से अलङ्कार और काव्य रचना की प्राय सभी आवश्यक बात मालूम हो जायँगी। काव्य रचना के प्रमियों को अवश्य देखना चाहिये। मूल्य— ≡)

भड़ौआ संग्रह

इसमें नीति उपदेश और हास्य मिश्रित कविताओं का सग्रह किया गया है नीति और उपदेश एक ऐसा विषय है कि स्वभावत ही रूखा और नीरस मालूम होता है पर वही बात अगर हँसी में या मनोहर काव्य में कही जाय तो रोचक हो जाती है, बहुत समय तक याद रहती है, और वक्त पर काम भी आती है। इसी कारण से पुस्तक में केवल नीति और उपदेश के ही कवित्त सवैया दोहों आदि का सग्रह किया गया है जो रोचक भी हैं और उपदेश जनक भी। हमें विश्वास है पुस्तक पढकर आप अवश्य प्रसन्न होंगे मूल्य— १)

मनोज मंजरी

पुराने और नये कवियो की स्फुट कविताओं का ऐसा अनूठा और मनोहर संग्रह आज तक नहीं छपा है। इसमें एक से एक अनूठे ऐसे ऐसे कवित्त और सवैया हैं कि पढ कर मन फडक उठता है। इसकी कोई भी कविता ऐसी नही है कि जिसे निन्दनीय बताया जा सके। विशेषता यह है कि सब कवित्त ऐसे क्रम से रक्खे गये है कि जिस समय जिस विषय की कविता देखना चाहे तुरत मिल सकती हैं हमारा अनुरोध है कि आप इस पुस्तक को केवल देख ही नहीं बलिक इसके कवित्त याद रख कर सुजन समाज में ख्याति लाभ करें। मूल्य— १)

मिलने का पता—

लहरी बुकडिपो, काशी।